

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लत्तुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये द्वादशं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये द्वादशं दशकम् ॥

ররাহারতারর্গনং, ভুম্যুঙ্করণর্গনং চ

স্বায়ন্তুরো মনুরথো জনসর্গশীলো  
দৃষ্টরা মহীমসময়ে সলিলে নিমগ্নাম্।  
শ্রষ্টারমাপ শরণং ভরদভিঘ্রসেরা -  
তুষ্টাশযং মুনিজনৈঃ সহ সত্যলোকে ॥ 12.1 ॥

কষ্টং প্রজাঃ সৃজতি ময্যরনির্নিমগ্না  
স্থানং সরোজভর কল্পয তৎপ্রজানাম্।  
ইত্যেরমেষ কথিতো মনুনা স্বয়ন্তু -  
রশ্চোরুহাঙ্ক তর পাদযুগং র্যচিন্তীৎ ॥ 12.2 ॥

হা হা রিভো জলমহং ন্যপিবং পুরস্তা -  
দদ্যাপি মজ্জতি মহী কিমহং করোমি।  
ইৎং ৎরদভিঘ্রযুগলং শরণং যতোহস্য  
নাসাপুটাৎ সমভরঃ শিশুকোলরূপী ॥ 12.3 ॥

অস্মুষ্ঠমাত্রপুরুৎপতিতঃ পুরস্তাৎ  
ভূযোহথ কুন্তিসদৃশঃ সমজ্জুস্তথাস্তম্।  
অভ্রে তথারিধমুদীক্ষ্য ভরন্তমুচৈ -  
রিস্মেরতাং রিধিরগাৎ সহ সুনুভিঃ স্নৈঃ ॥ 12.4 ॥

কোহসারচিন্ত্যমহিমা কিটিরুখিতো মে  
নাসাপুটাৎ কিমু ভরেদজিতস্য মাযা।

इत्थं रिचिन्तयति धातरि शैलमात्रः

सद्यो भरन् किल जगर्जिथ घोरघोरम् ॥ 12.5 ॥

तं ते निनादमुपकर्ण्य जनस्तपःस्थाः

सत्यस्थिताश्च मुनयो नुनुरुर्भरन्तम्।

तत्स्रोत्रहर्षुलमनाः परिणद्य भूय -

स्तोयाशयं रिपुलमूर्तिररातरञ्चम् ॥ 12.6 ॥

उर्ध्वप्रसारिपरिधुम्नरिधुतरोमा

प्रोत्क्षिप्तबालधिरराङ्गुखघोरघोणः।

तूर्णप्रदीर्णजलदः परिघूर्णदम्भा

स्तोतृन् मुनीन् शिशिरयन्नरतेरिथ ंरम् ॥ 12.7 ॥

अन्तर्जलं तदनुसङ्गुलनक्रचक्रं

द्राम्यतिमिङ्गिलकुलं कलुषोर्मिमालम्।

आरिश्य भीषणररेण रसातलस्था -

नाकम्पयन् रसुमतीमगरेष्यञ्चम् ॥ 12.8 ॥

दृष्टराहथ दैत्यहतकेन रसातलाञ्छे

संरेशितां ऋतिं कूटकिटिर्बिभो ंरम्।

आपातुकानरिगणय्य सुरारिखेटान्

दंष्ट्राङ्गुरेण रसुधामदधाः सलीलम् ॥ 12.9 ॥

अभ्युद्धरन्नथ धरां दशनाग्रलग्न -

मुस्ताङ्गुराङ्कित इराधिकपीररात्मा।

उद्धूतघोरसलिलाज्जलधेरुदङ्गन्

क्रीडारराहरपुरीश्वर पाहि रोगां ॥ 12.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्वादशं दशकं समाप्तम् ॥